OM-3 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 10/04/2021 2:26 PM Page 7

सच्चाई, सफाई और सादगी की मिसाल दादी जानकी

ब्र.कु.सुदेश दीदी, जर्मनी

त्यागी भी रॉयल भी

हमें लग रहा है कि दादी हमें एक डायमण्ड 'की' देकर गयी हैं। उन्होंने न केवल अपना जीवन हीरे तुल्य बनाया बल्कि अनेकों का भी हीरे जैसा जीवन बनाने के निमित्त बनीं। 1974 में हम और दादी जी लंदन गये और एक छोटे फ्लैट में रहे। दादी का जीवन सिम्पल, सादगी और परमात्म प्रेम यानी वो प्रेरणा देने वाला रहा। उसमें हम आठ बहनें रहती थीं। रात को हम लोग ज़मीन पर सोते थे और दादी जी क्लास रूम में रखे एक लकड़ी के तख्ते पर सोती थीं, जिसे दिन में क्लास कराने के लिए संदली के रूप में इस्तेमाल करते थे। और दिन में बहुत कम रेस्ट करने का चांस रहता था। परन्तु दादी जी जैसे की आराम से परमात्मा की गोद में लेटी हैं। वो इतना सख्त बोर्ड है लकड़ी का, मैटर्स तो उस पर थी परन्तु एक जीवन में त्याग की धारणा, त्याग भी नहीं कहेंगे परन्तु भाग्य है कि भगवान की मुरली जहाँ चलती है उस स्थान पर विराजमान अथवा परमात्मा की याद में, प्रभु प्रेम की गोद में विश्राम करते हैं। धीरे-धीरे तो मकान बढ़ते चले गये और अभी तो ग्लोबल कोऑपरेशन हाऊस, डायमण्ड हाऊस, रिट्रीट सेंटर तो देखिए त्याग के बीज से कितना बड़ा भाग्य बनता है कि दादी जी की शुरू की सिम्पलीसिटी, त्याग की भावना से अच्छी प्रेरणा मिली। परन्तु उस त्याग में दादी जी के संस्कारों में रॉयल्टी बहुत थी।

स्वच्छता स्वाभाविक रीति से, कोई छोटा-सा तिनका भी इधर-उधर गिरा हुआ है तो दादी जी उसको उठाकर वहाँ से हटाती, कोई चीज़ इधर-उधर बिखरी हुई,नहीं। हृदय की भी स्वच्छता, रूम की भी स्वच्छता जहाँ बैठते हैं वहाँ भी स्वच्छता और जिनके साथ रह रहे हैं उनके साथ भी स्वच्छ मन, स्वच्छ भावना, श्रेष्ठ वृत्ति। वृत्ति, दृष्टि, व्यवहार में सत्यता थी। शुभ भावना और शुभ कामना की तो दादी अवतार थीं।

ब्र.कु. शुक्ला दीदी,दिल्ली

मैंने दादी को समय सफल करते देखा

दादी जी का जीवन एक खुली किताब के रूप में था। जिसका एक-एक पन्ना खोलकर देखें तो कुछ जानने के लिए, कुछ सीखने के लिए, कुछ समझने के लिए और कुछ धारण करने के लिए बहुत सारी बातें हमें मिलती थी। जो हमें श्रेष्ठ और महान जीवन बनाने के लिए बहुत उपयोगी होती थी। दादी जी अनुशासन प्रिय थीं। दादी जी कहा करती थी कि सवेरे से लेकर प्रातः 8 बजे तक मौन में ही रहकर और बाबा की याद में ही रहकर मनन-चिंतन करना है। इसके सिवाय और कोई बात नहीं करनी है। दादी जी हमेशा योग साधना के ऊपर बहुत ध्यान देती थीं। मैंने देखा वो बीच-बीच में एकांतप्रिय और अंतर्मुखी हो जाती थीं। कई बार मैंने देखा वो अपना कमरा बंद करके एक अच्छी योग साधना करती थीं। और निरीक्षण करती थीं कि मेरे में और बाबा में क्या अंतर है। दादी जी प्रभु की ऐसी गोपिका थीं, ईश्वरीय रंग में ऐसी रंगी हुई थीं जो उनको देखते ही लगता था कि अगर गोपिका देखनी हो तो एक दादी जानकी को देखो। एक बार 1997-98 के बीच में सेंटर पर गई तो दादी जी कुछ कन्याओं के साथ एम्ब्रायडरी(कढाई) कर रही थीं तो मैंने पूछा दादी जी आप ये क्या कर रही हैं? तो दादी जी ने बड़े प्यार से उत्तर दिया कि समय का सदुपयोग कर रही हूँ। हमारे पास काफी समय होता है, समय को इधर-उधर वेस्ट न करके अपनी मेहनत से कुछ कमा कर खा लेना सर्वोत्तम होता है। तो दादी जी का ऐसा श्रेष्ठ जीवन देखकर मुझमें भी ऐसा महान जीवन जीने की शक्ति आई और एक आशा की किरण पैदा हो गई।

ब्र.कु. कमला दीदी,निदेशिका ,म.प्र.,छ.ग.

विश्व कल्याण और परोपकार दादी के नस-नस में

दादी जी का व्यक्तित्व बहुत अनूठा, अनोखा, महान और विशाल था। दादी जी के अन्दर विश्व कल्याण की भावना, कितनी परोपकारिता तो हम सच बतायें दादी जी के जीवन का, उनकी धारणाओं का, उनकी सेवाओं का उनके व्यक्तित्व का मेरे मन पर तो बहुत प्रभाव पड़ा। और आज भी कोई बात होती है तो मैं यही सोचती हूँ कि यदि ऐसी परिस्थिति दादी के सामने आती तो दादी क्या करती! मुझे वैसे ही करना चाहिए। अगर बाबा के ज्ञान को प्रत्यक्ष अनुभव करना चाहो तो दादी की पालना से हम कर सकते हैं।

परिवार की भासना आती थी दादी से

ब्र.कु. राज दीदी, निदेशिका, काठमांडू,नेपाल

एक बार मधुबन से प्यारे बाबा ने हमें मुम्बई में प्रदर्शनी में भेजा। मुम्बई प्रदर्शनी के बाद बड़ी दीदी मनमोहिनी ने पूना भेजा। उन्होंने कहा कि राज इतना नज़दीक आई हो तो पूना में दादी जानकी जी से मिलकर आओ। हम दादी जी के पास गये। उनका आश्रम, योग का वातावरण, शांत वातावरण, ज्ञानयुक्त वातावरण ऐसा हमें फील हुआ। बहुत-बहुत निर्मान, महान, क्लास करना-कराना और भंडारे में जाना, खाना-पीना देखना, ऑलराउण्ड... दादी निर्मान और महान रहती थीं। उनके अन्दर निर्णय शक्ति और परख शक्ति भी बहुत थी, जो हमने सीखी और सीखते गए। दिनभर दादी सेवा में रहती थीं। और शाम को आना और फिर शाम को क्लास। दादी का भाषण हमेशा ऐसा होता था जैसे कि वो अपने परिवार से मिल रही हों। भगवान क्या है आपका पिता है। वो बहुत कुछ देने के लिए आया हुआ है और हमें उससे लेना है। ऐसे लगता था जैसे दादी बहुत-बहुत प्यार से भगवान का खज़ाना दे रही हैं, और लेने के लिए सीखा रही हैं।

दादी हमेशा ज्ञान की नई और गुह्य बातें सुनातीं

ब्र.कु. पुष्पा दीदी, दिल्ली पांडव भवन

एक बार मुझे बहुत बड़ा सौभाग्य मिला जब प्यारी दादी जी विदेश में 1974 में लंदन में गईं। और उसके तीन-चार वर्ष बाद भारत वापिस आये, और दिल्ली में पांडव भवन में रहे। सौभाग्य से दादी गुल्ज़ार ने मुझे एक-दो स्थानों पर उनके साथ टूर पर भेजा, तो एक बहुत समीपता, बहुत घनिष्ठता दादी से मैंने पायी और मैंने देखा कि प्यारी दादी जो बहुत त्यागी, तपस्वीमूर्त, सादगी की चलती-फिरती एक लाइट हाउस, माइट हाउस थी। कई बार हमने देखा, दादी सुनाया भी करती कि मुझे हमेशा बाबा और ड्रामा याद रहता है, मैं साक्षी होकर चलती हूँ। इसीलिए मैं निश्चिंत रहती हूँ। मुझे किसी व्यक्ति, किसी वस्तु, पदार्थ, वैभव कुछ नहीं चाहिए। मेरे एक कंधे पर बाबा है और एक कंधे पर ड्रामा है और जितना दादी बाबा को हर समय याद करते रहती, तो उतना ही दादी को हमने देखा ड्रामा भी याद रहता था। जब सन्1981 में दिल्ली में लाल किले पर बहुत बड़ा विश्व महायज्ञ नाम से कार्य चला जिसमें देश-विदेश के सभी भाई-बहन शामिल हुए। और सभी की तरफ से बहुत सुन्दर-सुन्दर, बड़े-बड़े स्टाल्स बनाये गए। तो सभी दादियां दिल्ली पांडव भवन में रहीं। दादी प्रकाशमणि, दादी जानकी, दादी गुल्ज़ार तो थी हीं, दादी ईशू और दादी जानकी काफी समय से वहाँ थे। विदेशी भाई-बहन भी वहाँ पर थे, अपने-अपने स्टाल की तैयारी कर रहे थे। तो दादी बड़े प्यार से बात करतीं, एक-एक विदेशी को इतनी गहरी दृष्टि देतीं और साथ-साथ सभी दादियां बैठती थीं तो बहुत चिट-चैट चलती। दादी किसी को मिल रही होती थीं, दादियों के बीच में भी मैं देखती थी कि दादी जानकी कोई न कोई एक नई प्वाइंट सुनातीं। तो जैसे ज्ञान रत्नों का भंडार दादी रहीं। हमें दादी के बोल से हमेशा दृढ़ता अनुभव होती थी। और कोई भी बात बड़ी अथॉरिटी से कहतीं ताकि सामने वाला उसे जल्दी फॉलो कर ले। और जीवन में ला सके।

अंदर-बाहर की क्वालिटी पर था विशेष ध्यान

ब्र.कु. सुषमा दीदी,जयपुर

मुझे दादी जी के करीब रहकर सेवा करने का, सीखने का मौका मिला। मैंने देखा दादी सावधानी भी देती थीं और देती ऐसे ढंग से थीं कि समझने वाला समझ सके। एक बार कोई बात हुई तो दादी ने बस इतना ही कहा कि छौंक लगती है तो खुश्बू चारों ओर फैल जाती है अगर कोई भी कर्म हमारा ऊपर-नीचे हो जाता है, कोई गलती हो जाती है तभी तो बात फैलती है। अगर गलती ही न हो,तो बात कैसे फैलेगी! ये बात दादी जी ने छौंक के बहाने मुझे समझा दी। ऐसे ही मैं एक बार जर्मनी में थी, तो दादी जी मेरे पास आईं। दादी का फुल अटेंशन केवल चीज़ों की क्वालिटी पर नहीं लेकिन आत्मा की क्वालिटी पर होता। दादी हमेशा कहतीं, आत्मा की क्वालिटी बहुत अच्छी होनी चाहिए। दादी जी हमें ये समझाती रहीं कि बाबा जो कहता है कि 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी ये आत्मा की डिवाइन क्वालिटी है और वह क्वालिटी हमारे में तभी आती है जब हमारा एक-एक संकल्प, एक-एक कर्म, छोटे से छोटी बात पर भी हमारा अटेंशन हो।

तत्कालिन महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के साथ दादी जानकी जी।

आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए तत्कालिन माननीय प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव, राज्यपाल चन्ना रेड्डी,राज., दादी प्रकाशमणि जी, दादी जानकी जी तथा अन्य गणमान्य लोग।

दादी जानकी जी को ऑल इंडिया काउंसिल ऑफ ह्यूमन राइट्स द्वारा 'डॉ. ए.पी.जे. कलाम वर्ल्ड पीस अवार्ड' से सम्मानित किया गया।